पुस्तक समीक्षा

अठारहवीं सदी: बीकानेर

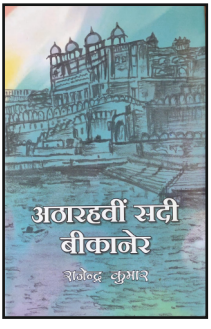

लेखक : राजेन्द्र कुमार
प्रकाशक : लिट्रेरी सर्किल, जयपुर
प्रकाशन वर्ष : 2021
पृष्ठ : 305
मूल्य : 995 रूपये

बीकानेर रियासत के ऐतिहासिक अध्ययन हेतु सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पुरालेखीय दस्तावेज राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर की कागद बहियां है। इन्हीं कागद बहियों में से एक बही, जो विक्रम सम्वत् 1827/1770 ई. की है, का अनुलेखन डॉ. राजेन्द्र कुमार ने एक पुस्तक के रूप में किया है। बही में बीकानेर के महाराजा गजसिंह के एक वर्ष के शासनकाल का सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक इतिहास का लेखा-जोखा है। मूल बही मारवाड़ी भाषा की मोड़िया लिपि में लिखी गई है जिसका एक-एक शब्द तथा वाक्य को पढ़ना दुरूह कार्य है। ऐसे में संपूर्ण बही को एक पुस्तक का स्वरूप प्रदान करना अपने आप में प्रथम, अनूठा एवं श्रमसाध्य कार्य है।

मोड़ी लिपि में मात्रा न के बराबर होती है तथा शब्दों के बीच अंतराल भी नहीं होता। भाषा को जिस अंदाज में बोला जाता, उसी तरह उसका लेखन होता था। मुग़ल प्रभाव के कारण बोलचाल एवं प्रशासन में फारसी भाषा के भी बहुत से शब्दों का प्रचलन था जो बही में दिखाई देता है। इन सभी कारणों से बहियों को पढ़ना एवं समझना एक दुष्कर कार्य है। लेखक ने अध्येताओं एवं शोधार्थियों की इन सभी मुश्किलों को बहुत ही आसान कर दिया है।

लेखक ने बही के लिप्यांतरण के साथ-साथ उसी पृष्ठ पर पाद-टिप्पणियां देकर विषयवस्तु को बहुत ही सरल और ग्राहय बना दिया है। बीकानेर की

प्रशासनिक व्यवस्था के अन्तर्गत *चीरा* व *परगना* तथा इनके प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों, राज्य की भूराजस्व व्यवस्था तथा भूमि के वर्गीकरण एवं वितरण तथा भूमिदान के प्रकारों का जटिल विश्लेषण किया है। राजस्व करों के साथ ही व्यापार, व्यापारिक मार्गों व करों, ऋण, हुण्डी एवं मुद्रा प्रणाली संबंधी विशिष्ट जानकारियां दी है। राज्य की खनिज संपदा जिसमें मुल्तानी मिट्टी, जिप्सम तथा चूने की खानों के साथ ही लाल पत्थर जिससे बीकानेर की अधिकांश हेरिटेज ईमारतें बनी हुई है, का विस्तृत विवरण दिया है।

पुस्तक पर्यावरणीय मुद्दों से भी अछूती नहीं है। राज्य और जनता द्वारा जल, अकाल, *आगोर, गोचर* एवं *ओरण* के प्रबन्ध के साथ ही वनस्पति एवं जीवों पर विस्तार से प्रकाश डालती है। पुस्तक समसामयिक सामाजिक जीवन के अध्ययन का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। यह तत्कालीन सामाजिक जीवन, रीति रिवाज एवं परम्पराएं, नियम व कानून तथा परम्परागत सामाजिक व्यवस्थाओं का सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत करती है।

विद्वान लेखक ने पुस्तक में राजनीति, धर्म, संस्कृति, पर्यावरण, अपराध एवं दण्ड व्यवस्था संबंधी तथ्यों का विस्तृत विवरण दिया है। बही को मूल रूप में पठनीय बनाने के लिए पुस्तक के अंत में छः विस्तृत परिशिष्टों को जोड़ा गया है जिससे यह पुस्तक शोधार्थियों के लिए और अधिक उपयोगी बन गई है। प्रथम परिशिष्ट में बही के कुछ मूल पृष्ठों का संकलन है जिनको संपादित पृष्ठों की सहायता से पढ़कर बही की लिपि को पढ़ना सीखा जा सकता है। दूसरे परिशिष्ट में मारवाड़ी भाषा की वर्णमाला दी गई है। तीसरे परिशिष्ट में विक्रम संवत् में महीने व तिथियां दी गई है,जो कालगणना हेतु आवश्यक है। हिसाब-किताब का विस्तृत विवेचन चतुर्थ परिशिष्ट में दिया गया है तथा माप-तौल एवं परिमाण पंचम परिशिष्ट की विषयवस्तु है। बीकानेर राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था का मूल आधार 'चीरा व्यवस्था' एवं उसकी कार्यप्रणाली की विशद् विवेचना अंतिम परिशिष्ट में की गई है। इन परिशिष्टों के माध्यम से शोधार्थी न केवल बही की लेखन शैली को समझ पाएंगे बल्कि स्वयं भी बहियों को पढ़ने एवं समझने में सक्षम हो पाएंगे।

इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने बीकानेर के इतिहास को भी तथ्यात्मक आधार पर नवीन रूप देने का सफल प्रयास किया है। इस अनुक्रम में, सूरतगढ़ व रतनगढ़ कस्बों की स्थापना की तिथियां सर्वप्रथम उद्घाटित की गई है साथ ही

महाराजा सूरतसिंह द्वारा भटनेर (हनुमानगढ़) को अधिकृत कर बीकानेर राज्य में सम्मिलित करने की तिथि का पटाक्षेप किया है। इस पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें 17–18वीं सदी के दौरान बीकानेर राज्य के क्षेत्र–विस्तार का मानचित्र के द्वारा सीमांकन किया गया है, जो इस प्रकार का प्रथम प्रयास है। इससे स्पष्ट होता है कि लेखक न केवल पुरालेखीय दस्तावेज़ों पर अपनी अच्छी पकड़ रखते है बल्कि वे स्थानीय इतिहास से भी गहन रूप से परिचित है।

पुस्तक में एक 'शब्द–संग्रहिका' दी गई है, जिसमें इस बही के कलिष्ट, तकनीकी व बार–बार उपयोग में आने वाले शब्दों का संकलन कर उनके अर्थ देने से यह ग्रंथ भावी शोधार्थियों के लिए बहियों को पढ़ने एवं समझने में अति उपयोगी होगा।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार में अब बहियों को पढ़ने एवं पढाने वाले नाममात्र के लोग ही शेष बचे है। अभिलेखागार में शोधार्थियों की बही को देखते ही भागने की प्रवृति बन गई है क्योंकि बही को पढ़ना और समझना दु:साध्य है तथा मार्गदर्शक भी नहीं है। यह पुस्तक इन दोनों कमियों को पूरा करने का काम करेगी। यह पुस्तक बीकानेर व राजस्थान के इतिहास में रूचि रखने वाले पाठकों व लेखकों को काफी पसंद आएगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। पुस्तक की भाषा शैली मंजी हुई, सरल एवं सजीव है। प्रथम परिशिष्ट के अलावा पुस्तक की छपाई–सफाई सुन्दर है। पुस्तक का मूल्य थोड़ा ज्यादा रखा गया है जिससे पाठकों व शोधार्थियों के लिए इसे खरीद पाना थोड़ा मुश्किल होगा। लेखक द्वारा पाद–टिप्पणियों में बही के अतिरिक्त अन्य स्रोतों के प्रयोग से यह पुस्तक और अधिक उपयोगी तथा प्रमाणिक बन गई है। लेखक डॉ. राजेन्द्र कुमार का प्रयास अति प्रशंसनीय है। सही अर्थों में यह पुस्तक बहियों को पढ़ने की कुंजी है जो भावी शोधार्थियों व जिज्ञासु पाठको के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होगी।

दिनांक: 20.07.2024

बीकानेर।

समीक्षक : डॉ. सुखाराम
सहायक आचार्य इतिहास
राजकीय डूँगर महाविद्यालय,
बीकानेर।